aglasem.com

कक्षा १२ अर्थशास्त्र नोट्स

उपभोक्ता का व्यव्हार और मांग



Key Notes and Important Questions with Answers

इकाई-II

उपभोक्ता का व्यवहार और माँग

स्मरणीय बिन्दु

उपभोक्ता संतुलन

- **उपभोक्ता :** उपभोक्ता वह है जो अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय करता है।
- **उपयोगिता:** किसी वस्तु का वह गुण, जो मानवीय चाहतों को संतुष्ट करता है, उपयोगिता कहलाती है।
- **गणनावाचक उपयोगिता:** जब उपयोगिता को मात्रा या वस्तुत: इकाई के रूप में व्यक्त किया जाता है।
- **कुल उपयोगिता :** एक निश्चित समय में वस्तु की सभी इकाइयों का उपभोग करने पर प्राप्त संतुष्टि का योग कुल उपयोगिता कहलाता है।
- **सीमांत उपयोगिता :** वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने पर कुल उपयोगिता में होने वाली निवल वृद्धि को सीमांत उपयोगिता कहते हैं।
- **ह्रासमान सीमांत उपयोगिता नियम :** किसी वस्तु की इकाइयों का उत्तरोत्तर उपभोग करने पर प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता क्रमश: घटती चली जाती है।
- **क्रमवाचक उपयोगिता:** जब उपयोगिता को गुणवत्ता के अनुरूप क्रमानुसार व्यक्त किया जाय।
- **उपभोक्ता बंडल :** उपभोक्ता बंडल दो वस्तुओं की मात्राओं का ऐसा संयोजन अथवा समूह है जिन्हें उपभोक्ता वस्तुओं की कीमत तथा अपनी दी हुई आय के आधार पर खरीद सकता है।
- **उपभोक्ता बजट :** उपभोक्ता का बजट उसकी वास्तविक आय या क्रय शक्ति को बताता है जिसके द्वारा वह दी हुई कीमत वाली वस्तुओं की निश्चित मात्रा खरीद सकता है।

- **बजट सेट :** यह उपभोक्ता के समस्त संयोजनों का या बंडलों का सेट है, जो वह अपनी मौद्रिक आय के अन्तर्गत प्रचलित कीमतों पर खरीद सकता है।
  बजट सेट का समीकरण:– $M \geq Px \cdot X + Py \cdot Y$
- **बजट रेखा :** वह रेखा, जो दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोजनों को दर्शाती है जिसे उपभोक्ता अपनी समस्त आय का व्यय करके वस्तुओं की दी गई कीमत पर खरीद सकता है।
- **बजट रेखा का समीकरण** : $M = Px \cdot X + Py \cdot Y$
- **बजट रेखा में परिवर्तन :** बजट रेखा में समान्तर खिसकाव (दायें तथा बायें) उपभोक्ता की आय में परिवर्तन तथा वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के कारण होता है।
- **सीमांत प्रतिस्थापन दर :** वह दर जिस पर उपभोक्ता वस्तु X की अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए वस्तु Y की मात्रा त्यागने के लिए तैयार है।

  सीमान्त प्रतिस्थापन दर $= \frac{\Delta Y}{\Delta X}$ या $\frac{\text{Y वस्तु की हानि}}{\text{X वस्तु का लाभ}}$
- **अनधिमान वक्र :** अनधिमान वक्र दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को दर्शाता है, जो उपभोक्ता को समान स्तर की उपयोगिता अथवा संतुष्टि प्रदान करता है।
- **अनधिमान मानचित्र :** तटस्थता वक्रों (अनधिमान वक्रों) के समूह को अनधिमान मानचित्र कहते हैं।
- **अनधिमान वक्रों की विशेषताएँ :**

  1. **अनधिमान वक्र ऋणात्मक ढलान वाले होते हैं**–क्योंकि एक वस्तु की इकाईयों की अधिक मात्रा का उपभोग बढाने के लिए यह आवश्यक है कि दूसरी वस्तु की इकाइयों का त्याग किया जाए ताकि सतुष्टि स्तर समान रहे।
  2. **अनधिमान वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होता है**–क्योंकि सीमान्त प्रतिस्थापन की दर घटती हुई होती है अर्थात उपभोक्ता एक वस्तु की अधिक मात्रा का उपभोग बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की इकाईयों का त्याग घटती दर पर करने के लिए तैयार होता है।
  3. **अनधिमान वक्र न तो कभी एक-दूसरे को छूते हैं और न ही काटते हैं**–

क्योंकि दो अनधिमान वक्र संतुष्टि के दो अलग-अलग स्तरों को प्रदर्शित करते है। यदि ये एक दूसरे को काटे तो कटाव बिन्दु पर सतुष्टि का स्तर समान होगा जो कि सम्भव नहीं है।

4. **ऊँचा अनधिमान वक्र संतुष्टि के ऊँचे स्तर को प्रकट करता है**–यह एक दिष्ट अधिमान के कारण होता है। उच्च तटस्थता वक्र दो वस्तुओं के उन बंडलों को दिखाता है जिस पर निम्न तटस्थता वक्र की तुलना में एक वस्तु की मात्रा अधिक है तथा दूसरी की कम नही है।

- **एक दिष्ट अधिमान :** उपभोक्ता का अधिमान एकदिष्ट है यदि उपभोक्ता दो बंडलों के मध्य उस बंडल को प्राथमिकता देता है, जिसमें दूसरे बंडल की तुलना में कम से कम एक वस्तु की अधिक मात्रा होती है और दूसरे वस्तु की मात्रा कम नहीं होती है।
- **उन्नतोदर अधिमानः** उपभोक्ता का अधिमान उन्नतोदर अधिमान है, यदि एक वस्तु के बदले दुसरी वस्तु के विनियम प्रतिस्थापन की तत्परता उत्तरोत्तर घट रही हो।
- **उपभोक्ता संतुलन :** एक ऐसी स्थिति जहाँ उपभोक्ता अपनी आय को इस प्रकार व्यय करता है कि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो।
- **उपभोक्ता संतुलन की शर्तें :**

1. **उपयोगिता विश्लेषण (उपयोगिता की गणनावाचक अवधारणा) :** इस अवधारणा के अनुसार, उपयोगिता की गणना 'यूटिल्स' में की जा सकती है। 'यूटिल्स' को उपयोगिता की इकाइयाँ कहते हैं।

शर्तें : (a) एक वस्तु की स्थिति में –

(i) MUx उत्तरोत्तर गिरती हुई है

(ii) $MUm = \frac{MUx}{Px}$ [अगर $MUm = 1$, तो $MUx = Px$]

यहाँ MUm = मुद्रा की सीमांत उपयोगिता

MUx = वस्तु x की सीमांत उपयोगिता

Px = वस्तु x का मूल्य

(b) दो वस्तु की स्थिति में-

(i) MUx व MUy गिरती हुई हो

(ii) $\frac{MUx}{Px} = \frac{MUy}{Py} = MUm$

2. **तटस्थता वक्र विश्लेषण (उपयोगिता की क्रमवाचक अवधारणा) :** इस अवधारणा के अनुसार उपयोगिता की गणना नहीं की जा सकती, परन्तु उसे क्रम के रूप में प्रदर्शित कर सकते हैं।

शर्तें :

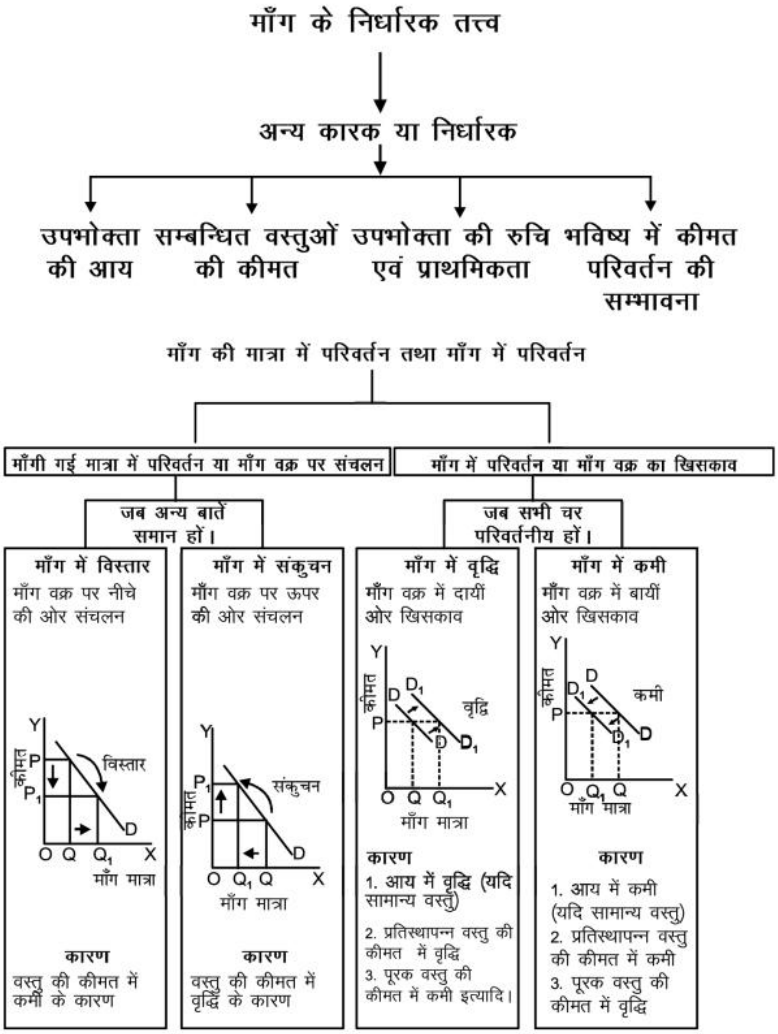
(i) तटस्थता वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होना चाहिए। अर्थात् MRSxy उत्तरोत्तर गिरती हुई होनी चाहिए।

(ii) $MRSxy = \frac{Px}{Py}$ $\begin{bmatrix} Px = \text{वस्तु X का मूल्य} \\ Py = \text{वस्तु Y का मूल्य} \end{bmatrix}$

मांग विश्लेषण

- **माँग :** वस्तु की वह मात्रा जिसे उपभोक्ता किसी निश्चित कीमत एवं निश्चित समय पर खरीदता है या खरीदने के लिए तैयार होता है।
- **बाजार माँग :** कीमत के एक निश्चित स्तर पर किसी बाजार में सभी उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु की खरीदी गई मात्राओं का योग 'बाजार मांग' कहलाता है।
- **माँग फलन:** यह किसी वस्तु की माँग तथा उसे प्रभावित करने वाले कारकों के मध्य फलनात्मक सम्बन्ध को बताता है।

  $D = f(Px, Pr, Y, T, E, N, Yd)$.
- **माँग का नियम :** यह बताता है कि यदि अन्य बातें समान हों तो किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने से उसकी माँग मात्रा घटती है और उस वस्तु की कीमत में कमी होने से उसकी माँग मात्रा बढ़ती है अर्थात् कीमत तथा माँग मात्रा में ऋणात्मक संबंध होता है। यह माँग एवं कीमत के गुणात्मक या संकेतात्मक संबंध को व्यक्त करता है।
- **माँग अनुसूची :** माँग अनुसूची वह तालिका है जो विभिन्न कीमत स्तरों पर एक वस्तु की माँग मात्राओं की दर्शाता है।
- **माँग के निर्धारक:** कीमत परिवर्तन के अतिरिक्त अन्य कारकों में परिवर्तन जिनसे माँग प्रभावित हो, माँग के निर्धारक कहलाते हैं।

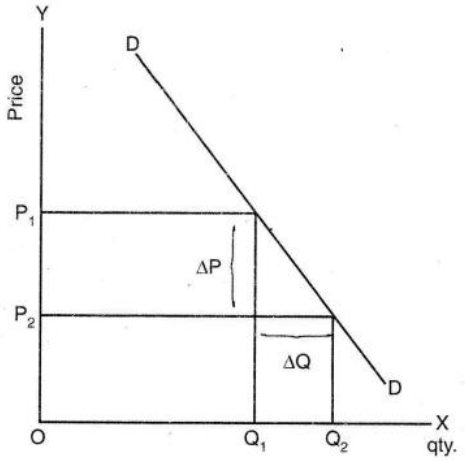


- **माँग में परिवर्तन :** माँग में परिवर्तन का कारण माँग के निर्धारकों में परिवर्तन है।
- **माँग की माात्रा में परिवर्तन :** माँग की मात्रा में परिवर्तन का कारण वस्तु की अपनी कीमत में परिवर्तन है, जब अन्य बातें स्थिर हों।

- **माँग वक्र :** यह किसी वस्तु की कीमत के सापेक्ष माँगी गई मात्राओं का ग्राफीय निरुपण है जब अन्य बातें स्थिर हों। यह माँग अनुसूची का ग्राफीय प्रस्तुतीकरण हैं।

- **माँग वक्र का ढाल**

$$\text{माँग वक्र का ढाल} = \frac{\text{कीमत में परिवर्तन}}{\text{माँगी गई मात्रा में परिवर्तन}}$$



$$M = \frac{\Delta P}{\Delta Q}$$

M = माँग वक्र का ढाल

Δ P = कीमत परिवर्तन

Δ Q= माँग की मात्रा परिवर्तन

माँच की लोच

- **माँग की कीमत लोच :** माँग की कीमत लोच, कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के फलस्वरूप माँग की मात्रा में होने वाले प्रतिक्रियात्मक प्रतिशत परिवर्तन को संख्यात्मक रूप में मापती हैं। अथवा माँग की कीमत के प्रति संवेदनशीलता ही माँग की लोच कहलाती है। यह माँग एवं कीमत के मात्रात्मक संबंध को दर्शाती है।

प्रतिशत या आनुपातिक विधि :

$$\uparrow$$

$$Ed. = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q} \text{ अथवा } E_d = \frac{(Q_1 - Q_0)}{(P_1 - P_0)} \times \frac{P_0}{Q_0}$$

जहाँ पर P_0 = प्रारम्भिक कीमत

Q_0 = प्रारम्भिक मात्रा

P_1 = अंतिम कीमत

Q_1 = अंतिम मात्रा

ΔQ = माँग की मात्रा परिवर्तन

ΔP = कीमत में परिवर्तन

Ed = माँग की कीमत लोच

अथवा $Ed = \frac{\text{माँग की मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$

माँग में % परिवर्तन $= \frac{\Delta Q}{Q_O} \times 100$

कीमत में % परिवर्तन $= \frac{\Delta P}{P_O} \times 100$

❑ **माँग की कीमत लोच को प्रभावित करने वाले कारक** -

(क) वस्तु की प्रकृति

(ख) उपभोक्ता की आय

(ग) निकटतम स्थानापन्न वस्तुओं की उपलब्धता

(घ) उपभोग के स्थगन की सम्भावना

(ङ) वस्तु पर व्यय होने वाली आय का भाग

(च) समय अवधि

परीक्षा उपयोगी प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न
(1 अंक)

प्र. 1. पानी की माँग बेलोचदार क्यों होती है?

उत्तर. क्योंकि पानी एक अनिवार्य वस्तु है।

प्र. 2. बाजार माँग को परिभाषित कीजिए।

उत्तर. बाजार माँग से अभिप्राय किसी वस्तु की उन मात्राओं के योग से है जिन्हें बाजार के सभी उपभोक्ता एक निश्चित समयावधि में वस्तु की विभिन्न कीमतों पर खरीदने के इच्छुक हैं, योग्य हैं व तैयार हैं।

प्र. 3. सीमांत प्रतिस्थापन दर (MRS) से क्या अभिप्राय है?

उत्तर. समान संतुष्टी स्तर बनाए रखते हुए, उपभोक्ता एक वस्तु X की एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने हेतु दूसरी वस्तु Y की जितनी इकाईयों का त्याग करने के लिए तैयार होता है, उसके अनुपात को सीमांत प्रतिस्थापन दर कहते हैं।

प्र. 4. एकदिष्ट अधिमान से क्या अभिप्राय है?

उत्तर. एकदिष्ट अधिमान से अभिप्राय है कि उपभोक्ता दो बंडलों के मध्य उस बंडल को प्राथमिकता देता है, जिसमें दूसरे बंडल की तुलना में कम-से-कम वस्तु की अधिक मात्रा होती है और दूसरी वस्तु की मात्रा कम नहीं होती है।

प्र. 5. बजट रेखा का समीकरण लिखिए।

उत्तर. $M = Px \cdot X + Py \cdot Y$

Q. 6. बजट सेट का समीकरण लिखिए।

Ans. $Px \cdot X + Py \cdot Y \leq M$

लघु उत्तरीय प्रश्न
(3-4 अंक)

प्र. 1. माँग में वृद्धि एवं वस्तु की माँग मात्रा में वृद्धि में भेद कीजिए।

उत्तर. अन्य कारकों में परिवर्तन के कारण जब माँग बढ़ती है तो उसे माँग में वृद्धि कहते हैं। इसके विपरीत अन्य बातें समान रहने पर जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण उसकी माँग बढ़ती है तो उसे माँग मात्रा में वृद्धि कहते हैं।

प्र. 2. एक वस्तु की दी गई कीमत पर एक उपभोक्ता यह निर्णय कैसे लेता है कि वह उस वस्तु की कितनी मात्रा खरीदे?

उत्तर. उपभोक्ता एक वस्तु की इतनी मात्रा खरीदता है जिस पर सीमान्त उपयोगिता कीमत के बराबर हो। जब तक सीमान्त उपयोगिता कीमत से अधिक होती है वह वस्तु को खरीदता रहता है। जैसे-जैसे वह अधिक इकाई खरीदता है सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है और एक स्थिति ऐसी आती है जहाँ सीमान्त उपयोगिता कीमत के बराबर हो जाती है। उपभोक्ता इस स्थिति तक ही वस्तु खरीदेगा।

प्र. 3. एक उपभोक्ता केवल दो वस्तुओं X और Y का उपभोग करता है। उपयोगिता विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की शर्तें बताइए और उनकी व्याख्या कीजिए।

उत्तर. उपभोक्ता के संतुलन की दो शर्तें हैं :

(1) $\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y}$ Or $\frac{MU_x}{MU_y} = \frac{P_x}{P_y}$

यदि $\frac{MU_x}{P_x} > \frac{MU_y}{P_y}$ तो उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में नहीं होगा क्योंकि वह x की अधिक मात्रा और y की कम मात्रा खरीद कर कुल उपयोगिता बढ़ा सकता है। इसी प्रकार $\frac{MU_x}{P_x} < \frac{MU_y}{P_y}$ है तो सन्तुलन की स्थिति नहीं है क्योंकि वह X की कम Y की अधिक मात्रा खरीदकर कुल उपयोगिता बढ़ा सकता है।

(2) वस्तु की अधिक इकाईयों का उपयोग करने पर उसकी सीमान्त उपयोगिता घटती है। यदि ऐसा न हो तो या तो उपभोक्ता केवल एक ही वस्तु खरीदेगा जो अवास्तविक है या वह कभी सन्तुलन की स्थिति में नहीं पहुँचेगा।

प्र. 4. समझाइए कि किसी वस्तु की माँग उसकी सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतों से कैसे प्रभावित होती है? उदाहरण दीजिए।

उत्तर. सम्बन्धित वस्तुएँ दो प्रकार की होती है - (1) प्रतिस्थापन्न वस्तु (2) पूरक वस्तु।

1. **प्रतिस्थापन्न वस्तु :** जब प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत घटती है तो वह दी हुई वस्तु की तुलना में सस्ती हो जाती है इसलिए उपभोक्ता इसे दी हुई वस्तु के स्थान पर प्रतिस्थापित करता है इससे दी हुई वस्तु की मांग घटती जाएगी। इसी प्रकार प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत बढ़ने से दी हुई वस्तु की माँग बढ़ जाएगी। उदाहरण : चाय और कॉफी आदि।

2. **पूरक वस्तुएँ :** जब पूरक वस्तु की कीमत घटती है तो उसकी माँग बढ़ जाती है और उसके साथ दी हुई वस्तु की माँग भी बढ़ जाती है। इसी प्रकार जब पूरक वस्तु की कीमत बढ़ती है तो साथ दी हुई वस्तु की माँग घट जाती है।

   उदाहरण : कार तथा पेट्रोल आदि।

प्र. 5. सामान्य वस्तु और घटिया वस्तु के बीच अन्तर बताइए। प्रत्येक का उदाहरण दीजिए।

उत्तर. **सामान्य वस्तुएँ :** सामान्य वस्तुएँ उन वस्तुओं को कहते हैं जिनकी माँग क्रेताओं की आय के बढ़ने पर बढ़ती है। अत: आय और माँग में धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है।

घटिया वस्तुएँ (निम्नकोटि वस्तुएँ) : घटिया (निम्नकोटि) वस्तुएँ उन वस्तुओं को कहते हैं जिनकी मांग क्रेताओं की आय के बढ़ने पर घटती है अत: आय और मांग में ऋणात्मक सम्बन्ध पाया जाता है।

उदाहरण : मोटा अनाज तथा मोटा कपड़ा

प्र. 6. मांग की कीमत लोच को प्रभावित करने वाले किन्हीं चार कारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर. 1. **वस्तु की प्रकृति :** अनिवार्य वस्तुएँ, जैसे नमक, जीवन रक्षक दवाएँ आदि की मांग बेलोचदार होती है तथा विलासिता की वस्तुओं की मांग लोचदार होती है।

2. **प्रतिस्थापन्न वस्तुओं की उपलब्धता :** ऐसी वस्तुएँ जिनके निकटतम स्थानापन्न उपलब्ध होते हैं, उनकी मांग अधिक लोचदार होती है तथा जिन वस्तुओं के प्रतिस्थापन नहीं होते उनकी मांग उपेक्षाकृत बेलोचदार होती है।

3. **उपयोग में विविधता :** जिन वस्तुओं के विभिन्न उपयोग होते हैं उनकी मांग अधिक लोचदार होती है। उदाहरण के लिए बिजली के विभिन्न उपयोग।

4. **उपभोक्ता की आदत :** उपभोक्ताओं को जिन वस्तुओं के उपभोग की आदत पड़ जाती है उनकी माँग बेलोचदार होती है। उदाहरण : शराब, सिगरेट।

Q. 7. कुल उपयोगिता तथा सीमान्त उपयोगिता के बीच सम्बन्ध समझाइए। तालिका का प्रयोग कीजिए।

Ans. कुल उपयोगिता, सीमांत उपयोगिताओं का संचयी योग होती है।

$$TU = \Sigma MU$$

मात्रा (इकाइयाँ)	कुल उपयोगिता (यूटिल्स)	सीमान्त उपयोगिता (यूटिल्स)
0	0	–
1	8	8
2	14	6
3	18	4
4	20	2
5	20	0
6	18	–2

तालिका से स्पष्ट है–

(1) जब तक सीमान्त उपयोगिता धनात्मक और घटती है कुल उपयोगिता बढ़ती है।

(2) जब सीमान्त उपयोगिता शून्य होती है तब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।

(3) जब सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक होती है, तब कुल उपयोगिता घटनी शुरु हो जाती है।

प्र. 8. सीमान्त उपयोगिता की परिभाषा दीजिए। ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता का नियम बताइए।

उत्तर. **सीमान्त उपयोगिता :** वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से कुल उपयोगिता में जो वृद्धि होती है, उसे सीमान्त उपयोगिता कहते हैं।

ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता का नियम : ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता का नियम यह बताता है कि उपभोक्ता जैसे-जैसे किसी वस्तु की अधिक मात्रा का उपभोग करता है एक सीमा के बाद वैसे-वैसे उस वस्तु की सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है इस नियम के अनुसार कुल उपयोगिता घटती दर से बढ़ती है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न
(6 अंक)

प्र. 1. अनधिमान वक्र की तीन विशेषताएँ समझाइए।

उत्तर. अनधिमान वक्रों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **इनका ढलान बाएँ से दाएँ नीचे की ओर होता है** - एक वस्तु की इकाइयों का अधिक उपभोग करने के लिए दूसरी वस्तु की कुछ इकाइयों का त्याग करना पड़ता है ताकि संतुष्टि स्तर वही रहे।
2. **मूल बिन्दु की ओर उत्तल (उन्नतोदर) होती है** - ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता के नियम के कारण सीमान्त प्रतिस्थापन दर निरन्तर घटती है।
3. **ऊँचा अनधिमान वक्र अधिक उपयोगिता दर्शाता है** - ऊँचा अनधिमान वक्र वस्तुओं के बड़े बंडलों को दर्शाता है। इसका अर्थ है अधिक उपयोगिता, एकदिष्ट अधिमान के नियम के कारण।

प्र. 2. अनधिमान वक्र विश्लेषण द्वारा उपभोक्ता सन्तुलन की शर्तें समझाइए। रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।

उत्तर. उपभोक्ता के सन्तुलन की दो शर्तें हैं-

(1) सीमान्त प्रतिस्थापन दर = कीमतों का अनुपात (MRS = Px/Py)

(2) सीमान्त प्रतिस्थापन दर निरन्तर घटती है।

व्याख्या :

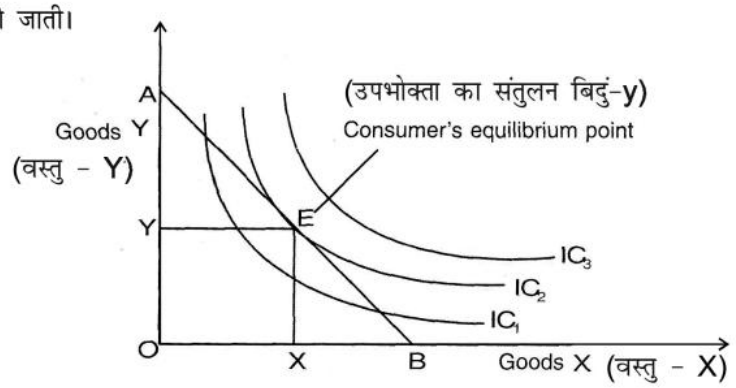
(i) मान लीजिए दो वस्तुएँ X तथा Y है। उपभोक्ता के सन्तुलन की पहली शर्त है कि

$$MRS = \frac{Px}{Py}.$$

यदि MRS > Px/Py है तो इसका अर्थ है कि उपभोक्ता X वस्तु की बाजार में जो कीमत है उसमें अधिक देने को तैयार हैं अत: वह X की अधिक मात्रा खरीदेगा। इससे MRS घटेगी और ऐसा तब तक होता रहेगा जब तक कि MRS = Px/Py.

यदि $MRS < \frac{Px}{Py}$ है तो इसका अर्थ है कि उपभोक्ता X वस्तु की बाजार में जो कीमत है उससे कम देने को तैयार है अत: वह X की कम मात्रा खरीदेगा। इससे MRS बढ़ेगी और ऐसा तब तक होता रहेगा जब तक कि $MRS = \frac{Px}{Py}$.

(2) सीमान्त प्रतिस्थापन दर निरन्तर घटेगी जब तक कि सन्तुलन की स्थिति स्थापित नहीं हो जाती।



प्र. 3. एक उपभोक्ता केवल दो वस्तुओं X और Y का उपयोग करता है। दोनों की बाजार कीमत 3 रु प्रति इकाई है। यदि उपभोक्ता इन दो वस्तुओं के ऐसे संयोग का चुनाव करता है। जिसकी सीमान्त प्रतिस्थापन दर 3 है, तो क्या उपभोक्ता संतुलन में है? कारण दीजिए। ऐसी स्थिति में एक विवेकी उपभोक्ता क्या करेगा? समझाइये।

उत्तर. दिया है Px = 3, Py = 3 और MRS = 3, एक उपभोक्ता संतुलन में तब कहा जायेगा जब – $MRS = \frac{Px}{Py}$

मूल्यों को प्रतिस्थापित करने पर

$$3 > \frac{3}{3}$$

इसलिए उपभोक्ता संतुलन में नहीं है। $MRS > \frac{Px}{Py}$ का अर्थ है कि उपभोक्ता X वस्तु की एक और इकाई खरीदने के लिए तैयार है–

- उपभोक्ता X वस्तु की अधिक इकाईयाँ खरीदेगा।
- ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता नियम के कारण सीमान्त प्रतिस्थापन दर घटेगी।
- और यह प्रक्रिया तब तक जारी रहेगी जब तक $MRS = \frac{Px}{Py}$ न हो जाए और इस प्रकार उपभोक्ता संतुलन में आ जायेगा।

प्र. 4. एक उपभोक्ता दो वस्तुओं X तथा Y का उपभोग करता है जिनकी कीमत क्रमशः 4 रु. और 5 रु. प्रति इकाई है। यदि उपभोक्ता दोनों वस्तुओं का ऐसा संयोग चुनता है जिसमें X की सीमान्त उपयोगिता 5 और 4 की सीमान्त उपयोगिता 4 है, तो क्या उपभोक्ता संतुलन में है। कारण दीजिए। ऐसी स्थिति में एक विवेकी उपभोक्ता क्या करेगा? उपयोगिता विश्लेषण का उपयोग कीजिए।

उत्तर– दिया है Px = 4, Py = 5 और MUx, MUy, एक उपभोक्ता $\frac{MUx}{Px} = \frac{MUy}{Py}$ होने पर संतुलन में होगा। मूल्यों को प्रतिस्थापित करने पर

$\frac{5}{4} > \frac{4}{5}$ or $\frac{MUx}{Px} > \frac{MUy}{Py}$ प्रति इकाई रू. की MUx, प्रति रू. MUy की सीमान्त उपभोगिता से ज्यादा है। इसलिए उपभोक्ता संतुलन में नहीं है।

उपभोक्ता X वस्तु की अधिक तथा Y वस्तु की कम इकाईयाँ खरीदेगा। इसलिए MUx कम होगा तथा MUy बढ़ेगा जब तक की $\frac{MUx}{Px}$ तथा $\frac{MUy}{Py}$ बराबर नहीं हो जाता।